अन्तर है जो आय और पूंजी में होता है। आय निर्यात आयात में एक प्रवाह के समान है जबकि पूंजी स्टॉक अवधारणा के समान है में एक संग्रह है। चालू खाते के अन्तर्गत वस्तुओं एवं सेवाओं, आय का निर्यात एवं आयात और एकपक्षीय हस्तान्तरणों को शामिल किया जाता है तथा पूंजी खाते में दीर्घकालीन और अल्पकालीन निवेशों एवं मुद्रा के आवागमन को शामिल किया जाता है

भुगतान-संतुलन हमेशा सन्तुलन में रहता है इसे निम्नवत भी स्पष्ट किया जा सकता है -

"भुगतान-शेष हमेशा सन्तुलन में होता है" का अर्थ है कि चालू-लेखा, पूंजी लेखा और सरकारी आरक्षित लेखा की क्रेडिट और डेबिट शेषों का बीजगणितीय जोड़ अवश्य शून्य होना चाहिए। भुगतान-शेष को निम्न प्रकार से लिखा जाता है -

$$B = R_f - P_f$$

जहाँ B = भुगतान-शेष

R_f = विदेशियों से प्राप्तियाँ

P_f = विदेशियों को किए गए भुगतानों को व्यक्त करता है

जब, $B = R_f - P_f = 0$

तो भुगतान-शेष संतुलन में है।

जब, $R_f - P_f > 0$

तो इसका मतलब है कि विदेशियों को किए गए भुगतानों की अपेक्षा विदेशियों से हुई प्राप्तियाँ अधिक है और भुगतान-शेष में आतिरेक है।

जब $R_f - P_f < 0$

अथवा

$R_f < P_f$

तो भुगतान-शेष में घाटा है, क्योंकि विदेशियों को जो भुगतान किए गए है, वे विदेशियों से हुई प्राप्तियों से अधिक है।

यदि Net विदेशी उधार दान तथा विदेशों में निवेश को मिला जाए, तो लोचदार विनिमय दर निर्यात को आयात से बदा देती है। अन्य करेन्सियों के दामों में घरेलू करेन्सियों का मूल्य घट जाता है। आयात की सापेक्षता में निर्यात अधिक सस्ते हो जाते है। इसे समीकरण के रूप में दिखाया जा सकता है -

$$X + B = M + I_f$$

जहाँ X = निर्यात, M = आयात

I_f = विदेशी निवेश

B = विदेश से उधार लेने को व्यक्त करते है।

अथवा $X - M = I_f - B$

अथवा $(X - M) - (I_f - B) = 0$

यह समीकरण बताता है कि भुगतान-शेष सन्तुलन में है। चालू लेखा के धनात्मक शेष को उसके पूंजी लेखा का ऋणात्मक शेष पूर्ण रूप से क्षतिपूर्ति कर देता है, और उलट भी। लेखांकन की दृष्टि से, भुगतान-शेष सदैव सन्तुलन में होता है। इसे निम्न समीकरण के सहायता से स्पष्ट किया जा सकता है-

$$C + S + T = C + I + G + (X - M)$$

अथवा $Y = C + I + G + (X - M)$

$(\because Y = C + S + T)$

जहाँ, C = उपभोग व्यय, S = घरेलू बचत

T = कर प्राप्तियां, I = निवेश व्यय

G = सरकारी व्यय, X = वस्तुओं और सेवाओं के निर्यात

M = वस्तुओं तथा सेवाओं के आयात को व्यक्त करता है।

उपर दिए गए समीकरण में C+S+T सकल राष्ट्रीय आय (GNI) अथवा राष्ट्रीय आय (Y) है और

$$C + I + G = A$$

जहाँ A को अवशोषण कहा जाता है। लेखाकंन की दृष्टि से यह आवश्यक है कि कुल घरेलू व्यय (C+I+G) और चालू आय (C+S+T) बराबर हो अर्थात् A = Y तो घरेलू बचत (S_d) और घरेलू निवेश (I_d) भी बराबर होने चाहिए। इसी तरह आवश्यक है कि चालू खाते में निर्यात अतिरेक (X > M) को निवेश से बढ़ी हुई घरेलू बचत ($S_d > I_d$) अतिपूर्ति करे। इसप्रकार लेखांकन की दृष्टि से, सुगतात: शेष हमेशा सन्तुलन में होता है।

लेखांकन प्रणाली में, एक लेन-देन का आन्त: प्रवाह और बाह्य-प्रवाह क्रमश: क्रेडिट और डेबिट पक्षों में लिखा जाता है। इसलिए क्रेडिट और डेबिट पक्ष सदैव सन्तुलन में होते है। यदि चालू लेखा में घाटा

हो तो इसे पूंजी लेखा में उतने ही आधिक्य द्वारा पूरा करके सन्तुलन किया जा सकता है। इसके लिए विदेशों से उधार लेकर या विदेशी वित्तीय रिजर्व से और स्वर्ण क्रीत द्वारा पूंजी लेखा में आधिक्य उत्पन्न किया जा सकता है। चालू लेखा में आधिक्य होने पर इसके विपरीत पूंजी लेखा में घाटे द्वारा सन्तुलन लाया जा सकता है। अतः इस दृष्टिकोण से भी "भुगतान-शेष सदैव सन्तुलन में होता है।"

Dr Sandhya Rai